Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ग्राम राग की गीतियों में कैशिक राग: विश्लेषणात्मक अध्ययन

DR. GIAN CHAND
Associate Professor (Music), Govt. College Dhami. Shimla, Himachal Pradesh

सार: *ग्राम राग का उल्लेख मात्र भरत के नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है क्योंकि भरत के काल में ग्रामरागों का नहीं अपितु जातियों का गायन प्रचार में था। जातियों के पश्चात ग्रामराग तथा ग्रामराग के बाद राग व्यवस्था प्रचार में आई। रागों का विकास क्रम प्रत्येक कालखण्ड में समय की परिस्थितिनुकूल परिवर्तित, सवंर्धित व विकसित होता रहा। इसके संवर्धन में गीतियों की अहम भूमिका रही है। ग्राम राग की गीतियों का सर्वप्रथम उल्लेख 'बृहदेशी में मिलता है, किन्तु मतंग के ही उद्धहरणों से सपष्ट होता है कि ग्राम के विकास सम्बन्धि ग्रन्थाधार उन्हें प्राप्त था। प्रत्यके ग्राम राग (शुद्ध , भिन्न आदि) के लिए तत्सम्बन्धी जाति एवं ग्राम का उल्लेख भी मतंग ने किया है क्योंकि जाति से ही ग्राम राग की उत्पति हुई है। जैसे शुद्ध साधारित की जाति षड़ज मध्यमा हैं और वह षड़ज ग्रामिक भी, उसी प्रकार शुद्ध कैशिक की जाति कार्मारवी है एवं वह मध्यम ग्रामिक है। भिन्न ग्राम रागों की जाति व ग्राम शुद्ध ग्राम रागों के समान ही है समस्त शुद्ध का लक्षण 'भिन्न' में जाएगा केवल उनमे गीति कृत (गान शैली) मे भेद हो ता है। शुद्ध कैशिक शुद्ध गीति में, गाया जाता है तथा भिन्नकैशिक भिन्न गीति में, इसलिए कहा गया है-जिस स्वर संस्थान (स्वस्थान) में शुद्ध कैशिक का गान होता है, उसी संस्थान (स्वस्थान) में भिन्न कैशिक गाया जाता है। भिन्नता केवल इस बात की है कि जिस संस्थान (स्वथान) में शुद्ध कैशिक का आलाप होता है उस संस्थान (स्वस्थान) को छोड़कर भिन्न कैशिक का स्वरालाप करना चाहिए। तात्पर्य ये है कि गीतियों के कारण ही ग्राम रागों में शैलीगत भिन्नता आती थी जिसके फलस्वरूप समान स्वरावली वालें ग्रामराग भिन्न-भिन्न गीतियों में गाने पर सर्वथा परस्पर भिन्न हो जाते थे।*

कुंजी शब्द: *ग्रांम, गीती, कैशिक, वेसर, श्रुति, गमक, मागधी*

भूमिका

ग्रांम राग की गीतियों का सर्वप्रथम उल्लेख 'बृहदेशी में मिलता है, किन्तु मतंग के ही उल्लेखों से सपष्ट होता है कि ग्राम के विकास सम्बन्धि ग्रन्थाधार उन्हें प्राप्त था''[1] संगीत रत्नाकर के अंग्रेजी अनुवाद डा0 आर0 के0 शरींगी ने भी उपरोक्त कथन की पुष्टि की है:-

'Bharata has spoken of the four pada-gities viz magadhi ardhamagadhi, Sambhavita and prithula. However, gitis as associated with ragas are first mentioned by matang"[2]

गीतियां दो प्रकार की है:1. पदाश्रित 2. स्वराश्रित। 'पदाश्रितगीतियों का वर्णन नाट्य शास्त्र में है। ये गीतियां मागधी,अर्धमागधी संभाविता तथा पृथुला इस प्रकार चार है। स्वराश्रित गीतियों की संख्या में विद्धानों में मतभेद है।''[3] दुर्गशक्ति ने पांच गीतियां स्वीकार की है..

'गीतयः पंच विज्ञेयाः शुद्ध भिन्नाऽय बेसरा।

गौड़ी साधारिता प्रोक्ता दुर्गामतमिदं मतम्।। 27।।'[4]

अर्थातः गीतियां पांच जाननी चाहिए शुद्धा, भिन्ना, वेसरा, गोड़ी और साधारिता। यह दुर्गा (दुर्गशक्ति) का मत है।

याष्टिक मत इस प्रकार है:

''भाषा चैव विभाषा च चान्तरभाषिका।

तिस्त्रा गीतयः प्रोक्ता याष्टिकेन महात्मतम्''[5]

याष्टिक के अनुसार भाषा विभाषा तथा अन्तरभाषा तीन अन्य गीतियां कही है। याष्टिक ने मुख्य पांच गीतियों का भी उल्लेख किया है:-

''गीतयः पंचचिज्ञेयाः शुद्धा भिन्नाऽय बेसरा

गौड़ी साधारिता प्रोक्ता याष्टिकेन महातमना।।[6]

कश्यप शार्दूल ने केवल एक भाषा गीति कहीं है

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

'- - - भाषा गीतिस्तथैकेव शार्दुल मतसम्मता'[7]।।273।।

मतंग ने सात गीतियों को स्वीकार किया है। इनकी सात गीतियां हैः शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, राग, साधारणी, भाषा एंव विभाषा। यथाः

'' - - प्रथमा शुद्धगीतिः स्याद द्वितीया भिन्नका भवैत्।

तृतीय गौड़िका चैव रागगीतिश्च्तुर्थिका

साधारणी तु विज्ञेया गीतज्ञैः पंचमी तथा।।269।।

भाषागीतिस्तु शष्ठी स्याद विभाषा चैव सप्तमी - -

उपरोक्त विविरण में मतंग ने वेसरा गीति का उल्लेख नहीं किया है बल्कि 'रागगीति' का नाम दिया है। दुर्गशक्ति के मत से राग और वेसरा एक ही है अतः मतंग ने भी राग गीति में अन्र्तभाव कर लिया है।

''दुर्गशक्तिमते रागा एवं वेसरा गण्यते।

तथा चाह दुर्गशक्तिः

स्वराः सरन्ति यदेगात तस्माद् वसेरकाः समृता'[8]

मतंग के परवर्ती काल में संगीत का जो प्रामाणिक ग्रन्थ हमें प्राप्त होता है वह है, शाङर्गदेव का संगीतरत्नाकर शार्ङगदेव ने ग्राम राग के पांच प्रकार एवं इनका आश्रय पांच गीतियों में होना माना है। यथाः

''पंचधा ग्रामरागाः। स्युः पंचगीतिसमाश्रयात्''[9]

शाङर्गदेव ने भी शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी बेसरा और साधारणी ये पांच गीतियां स्वीकार की है।

''गीतयः पंचशुद्धा च भिन्ना गौड़ी च बेसरा ..... साधारणीति''[10]

समस्त वर्णन को देखने के पश्चात् यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भरत के काल या उससे कुछ पश्चात तक भी ग्राम रागों का प्रचार था। इसके पश्चात् गीतियां प्रचार में आई तथा ग्राम रागों को उनके अन्तर्गत विभाजित किया गया ''शुद्ध के विनियोग का उल्लेख भरत एवं दुर्गशक्ति ने भी किया है।''[11]

प्रत्येक गीति की अपनी एक निजि विशेषता होती थी, जिससे ये गीतियां तथा इनके अंतर्गत आने वाले ग्राम राग एक दूसरे से पृथक हो जाते थे। ''प्रत्यके ग्राम राग (शुद्ध , भिन्न आदि) के लिए तत्सम्बन्धी जाति एवं ग्राम का उल्लेख भी मतंग ने किया है क्योंकि जाति से ही ग्राम राग की उत्पति हुई है। जैसे शुद्ध साधारित की जाति षड़ज मध्यमा हैं और वह षड़ज ग्रामिक भी, उसी प्रकार शुद्ध कैशिक की जाति कार्मारवी है एवं वह मध्यम ग्रामिक है। भिन्न ग्राम रागों की जाति व ग्राम शुद्ध ग्राम रागों के समान ही है समस्त शुद्ध का लक्षण 'भिन्न' में जाएगा केवल उनमे गीति कृत (गान शैली) मे भेद है। शुद्ध कैशिक शुद्ध गीति में, गाया जाता है तथा भिन्नकैशिक भिन्न गीति में, इसलिए कहा गया है-जिस स्वर संस्थान (स्वस्थान) में शुद्ध कैशिक का गान होता है, उसी संस्थान (स्वस्थान) में भिन्न कैशिक गाया जाता है। भिन्नता केवल इस बात की है कि जिस संस्थान (स्वथान) में शुद्ध कैशिक का आलाप होता है उस संस्थान (स्वस्थान) को छोड़कर भिन्न कैशिक का स्वरालाप करना चाहिए''[12]

मतंग के शब्दों में

''शुद्धस्थ लक्षणं समंग्र भिन्न कैशिक स्यापि विधते। तर्हि को भेदः।

गीतिकृतो भेदः शुद्ध कैशिको हि शुद्धगीत्या गीयते,

भिन्नकैशिकस्तु भिन्न गीत्या गीयते एतदुक्तम् भवति-येन सवस्थानेन

रागीयते शुद्ध कैशिके न तेन स्वस्थानेन भिन्न कैशिके रागीयत इति।[13]

मतंग के उपरोक्त उल्लेख का भाव इस प्रकार हैः शुद्ध (कैशिक) का समस्त लक्षण भिन्न कैशिक मे जाएगा, तब अन्तर क्या है? शुद्ध कैशिक शुद्धा गीति में गाया जाता है और जबकि भिन्नकैशिक भिन्ना गीति में। इसलिए कहा गया है- जिस स्वस्थान में शुद्धकैशिक का विस्तार होता है उस स्वस्थान में भिन्न कैशिक का विस्तार (आलाप) नहीं करना चाहिए अर्थात् उस स्वस्थान को छोड़कर भिन्नकैशिक का आलाप करना चाहिए। इन गीतियों के लक्षणों पर प्रकाश डालते हैः

मतंग ने शुद्धा गीति के लक्षण इस प्रकार कहे हैः ‘‘मन्द्रमन्द्रैश्च तारेश्चऋजुभिललित समैः स्वरैश्च श्रुतिभिः पुर्णा चोक्षा गीतिरूदाहृता।।275।।[14] अर्थातः चोक्षा (शुद्धा) गीति मंद्र तार सरल एवं आकर्षक स्वर और श्रुति से पूर्ण है। शाङर्गदेव इस गीति के विषय में कहते हैः‘‘---शुद्धा स्यादवक्रैर्ललितैः स्वरैः[15]

अर्थातः शुद्ध उस गायकी का नाम है जिसमें स्वरों का प्रयोग आनन्दकर, किन्तु साधारण ढंग से किया जाता है अर्थात जिस गायकी में मूर्च्छना और गमकादि मोहक गुणों का प्रयोग नहीं होता है।

मतंग ने भिन्ना गीति को सूक्ष्म एवं मधुर स्वरयुक्त, जिसमें लालित्यपूर्ण तत्वों का प्रयोग होता है, तार एवं मंद्र स्वरों का प्रयोग होता हो, गुणों वाला कहा हैः

‘‘सूक्ष्मैश्च प्रचलैर्वकैरूल्लासितप्रसारितैः

ललितैस्तारमन्द्रैश्च भिन्नागीतिरूदाहृता।।276।।[16]

निशंक के अनुसारः ‘भिन्ना वक्रैः स्वरैः सूक्ष्मैमधुरैगमकैर्युता[17] अर्थातः-जिसमें स्वरों का वक्र और सूक्ष्म प्रयोग तथा मधुर गमक के साथ गायन होता है वह भिन्ना गीति कहलाती है।

मतंग के अनुसारः गौड़ी गीतिः

‘‘ओहाटीललिताश्चापि स्वरा गोड़याश्च शोभनाः। हकारौकार योर्योगाहाटी परिकीर्तिता।।277।।

चिम्बुक हृदये न्यस्य ओहाटीमन्द्रजा भवेत्। दुरता द्रुततरा कार्या स्वरकम्पेन पीड़िता।।278।।

ओहाटी ललिता चापि दृष्टा दृष्टेन कर्मणा त्रिस्थान कर्णेयुक्ता त्रिस्थन चलना कुला।

चतुविर्धा तथौहाटी कर्तव्या गेयवेदिभिः समाक्षरा समा चैव कार्यरोहावरोहिणी।।

(औहाटी मन्द्रजोपाता प्रयोगे ध्वनिकम्पितैः)।।280।। अविश्रामेण त्रिस्थाने गौड़ी गीति रूदाहृता।। 281।।[18]

अर्थातःगौड़ी के स्वर एवं आकर्षित है जिसमें ओहाटि ललित स्वरों का समावेश है (जो हा और ओ स्वरों का संयोग है। ओहाटी में ठोडी को छाती के साथ लगा लेते है जो स्वरो को कंपित कर दुरत और अधिक द्रुत बनाता है। उपरोक्त श्लोकों का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया हैः

“Oati is also beautiful with seen and unseen action, it comprises of actions in three registers and is confounded (a kula) with movements in the three registers. Similarly Ohati has to be used by the knowledge ones in vocal music in a fourfold manner, viz samaksara, sama (smoth) in ascent and descent Ohati is obtained in performance as being born in the low (register) with shake of sound. Goudi Giti is said to subsist without rest in three registers.”[19]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

उपरोक्त अंग्रेजी अनुवाद का सारांश यही है के ओहाटी का चलन तीनो सप्तको में होता है ओहाटि का प्रयोग बुद्धिजनो द्वारा ही किया जा सकता है यह गायन संगीत में होता है यह चार घटकों के कारण होता हैः समाक्षर, सम, आरोही और अवरोही। ओहाटी का प्रदर्शन मंद्र स्थान में ध्वनि कंपन के साथ अधिक होता है। शार्ङ्गदेव ने गौड़ी गीति के विषय में कहा हैः

''गाढ़ेत्रिस्थानगमके रौहोटि ललितैः स्वरैः। अखण्डितस्थितिः स्थानत्राये गौड़ी मता सताम्।। 4।।

औहाटि कम्पितैर्मन्द्रैमृदुद्रुतरै स्वरैः। हाकारौकार योगेन ह्नन्नयस्ते चिबुके भवेत।। 5।।[20]

अर्थातः ओहाटि में स्वरो को द्रुत, मृदु एवं गमक युक्त लेते है जिसमें आ और ओ का संयोग रहता है। यह क्रिया ठोडी को हृदय पर रखकर (या लगाकर) की जाती है। जैसा पहले ही कहा जा चुका है कि मंतग ने वेसरा गीति का वर्णन न कर रागगीति का वर्णन किया है। परन्तु उन्होंने रागगीति का वेसरा गीति में अन्तर्भाव माना है अतः हम रागगीति और वेसरागीति को एक दूसरे का प्रयाय ही मानेगें। मतंग ने रागगीति को ललित स्वर युक्त, रंजक स्वर वाली तथा जिसमें राग के चारो वर्णो में रंजकता के साथ स्वरों का प्रयोग हो, ऐसा कहा है यथाः

''ललितगर्मकैश्चित्रोः प्रसन्नैरौरसेः समैः। रंजकेः स्वरसन्द्रभ रागगीतिरूदाहृता।।282।।

चतुर्णमपि वर्णानां यो रागः शोभनो भवेत। स सर्वो दृश्यते येषु तेन रागा इति स्मृता।।[21]

शार्ङ्गदेव ने भी वेसरा गीति के वही लक्षण कहे है जो मतंग ने बताए हैः

''वेगवद्भिः स्वरैर्वर्णचतुष्केऽप्यतिरक्तितः। वेगस्वरा रागगीतिर्वेसरा चोच्यते बुधै।।6।।[22]

अर्थातः-जिन रागों में स्वरो का वेग पूर्ण संचार होता है और चारों वर्णो स्थाई, अन्तरा, संचाई और आभोग का रंजकता के साथ प्रयोग हो ऐसे द्रुत स्वर वाले वेसरा को रागगिती भी कहते है। रागगीति का वर्णन करने से पहले मतंग ने कश्यप तथा दुर्गाशक्ति मत को प्रस्तुत किया है जो इस बात के लिए प्रयाप्त प्रमाण है कि राग गीति ही वेसरा गीति है। यथाः

''दुर्गशक्ति रागा एवं वेसरा गण्यनते तथा चाह दुर्गशक्ति ------''[23]

जिन आठ रागों का उल्लेख मंतग ने रागगीति के अन्तर्गत किया है, उन्हीं आठ रागों को पश्चात कालीन ग्रन्थकारों ने वेसरा गीति में स्थान दिया है इससे भी रागगीति, वेसरा गीति सिद्ध होती है। जिस गीति में उपरोक्त चारों गीतियों के लक्षण पाये जाते है वह साधारणी गीति है इस गीति में चारों गीतियों की विशेषता का समावेश है।

मतंग के शब्दों में

''ऋजुभिर्ललितैः कि´चत सुक्ष्मा सूक्ष्मैश्च। इषद दुतैश्च कर्तव्या मृदुमिर्ललितेस्तथा

प्रयोगैर्मसृणैः सूक्ष्मकाकुमिश्च सुयोजितैः एवं साधारणी ज्ञेया सर्वगीति सामाश्रया।।[24]

शार्ङ्गदेव ने साधारणी के लक्षण इस प्रकार कहें हैं

''चतुर्गीतिगतं लक्ष्म श्रिता साधारणी मता।

शुद्धा गीति योगेन रागाः शुद्धास्यो मना।''25

अर्थातः जिसमें चारो गीतियों के लक्षण पाएं जाते है वह साधारणी गीति हैं। शुद्धा गीति के अन्तर्गत जो राग आते है वे शुद्ध राग कहलाते है। जैसे जाति से ग्राम राग की उत्पति हुई है, उसी प्रकार ग्रामराग से भाषा, भाषा से विभाषा, विभाषा से अन्तरभाषा का जन्म हुआ हैं जाति और ग्रामरागों के ग्राम बताएं है। कई जातियों के मिश्रण से (चाहे वह शुद्धा जाति हो या विकृता अथवा संसर्गजा) एक ग्राम राग बना, अतः स्पष्ट है कि उसमें भी ग्राम का उल्लेख उचित था किन्तु भाषादि का मूल स्त्रोत ग्रामरागों में है, अतः भाषा-विभाषा-अन्तरभाषा के वर्णन

करते समय ग्राम का उल्लेख करना आवश्यक न था। केवल ग्रह, अंश स्वर नियम ही बताना काफी था। मंतग ने भाषादि के प्रसंग में स्थान-स्थान पर लोक रंजन की बात की है जो इस बात का द्योतक है कि पहले लोकरंजन करना ही इन भाषादि का मुख्य उद्देश्य था। पश्चात में यह मार्ग के अन्तर्गत वर्णित होने लगी। मतंग के अनुसारः

"भाषागीतिः समाख्याता एषा गीतिविचक्षणैः। यथा वै रंज्यते लोकस्तथा वै संप्रयुज्यते।।

ललितैर्बहुमिर्दीपतैः कम्पितै (र?रौ) रसैः सर्गे। तारातितारेर्मसृणैर्मध्ये मध्यमदीपितेः।।

गमकैः श्रोतृसुखदैर्ललितैस्तु यदृच्छया विभाषागीतिसतु संयोज्यतथालोकोऽनुरज्यते''।।[26]

उपर्युक्त श्लोक के कुछ तथ्य ध्यान देने योग्य हैः

- (क) भाषा विभाषा लोक रंजन करने वाली है।
- (ख) तार के साथ ही अतितार का प्रयोग भी निहित था।
- (ग) भाषा के लिए 'गमक' का उल्लेख किया गया है।
- (घ) इच्छानुसार स्वर प्रयोग करने की भी स्वाधीनता इन भाषादि में थी अर्थात कल्पना करने की छूट इसमें दी गई जो जाति या ग्राम राग में नहीं थी।

''जाति-ग्रामराग गान्धर्व के अन्तर्गत एवं भाषादि तथा अन्य देशी प्रकार जैसे रागांग भाषाग आदि के गान के अन्तर्गत रखा गया क्योंकि वैचित्राय का प्रारंभ भाषा से ही हो जाता है। --- गान्धर्व अर्थात जाति या ग्राम राग के प्रयोग में तो मध्यम को अविनाशी एवं अविलोपि कहा गया है किन्तु वैचित्राय के कारण भाषा तथा देशी रागों में मध्यम का लोप विहित माना गया है।''[27]

''ग्रामरागाणामेवालापप्रकारा भाषाच्याः। भाषाशब्दोऽत्रा प्रकार वाची''।[28]

अर्थातः- ग्राम रागों के भाषा प्रकार आलाप कहलातें है। भाषा शब्द का अर्थ यहां इस प्रकार है। याष्टिक ने भाषा राग चार तरह के कहे है। यथाः

'भाषा (2) चतुविर्धा। प्रोक्तामूल संड्कीर्ण देशजाः, छायाभात्राश्रयाः प्रोक्ता ग्राम रागे व्यवस्थिताः''।।[29]

याष्टिक के उपरोक्त चार प्रकार है... 1. मूल 2. संकीर्ण 3. देशज (देशी) 4. छायामात्रा। 'इनकी संज्ञान्तर है मूल की मूख्या, संकीर्ण की स्वाराख्या, देशज की देशाख्या, छायामात्रा को शाड्र्गदेव एवं कल्लिनाथ (टीका में) 'उपराग' माना है।''[30]

''भाषा मुख्या स्वराख्या च देशाख्या चोपरागजा।

चतुर्विधा मतड्गोक्ता मुख्यान्नयोपजीवनी।।44।।''[31]

''भाषा-विर्भाषा अन्तर भाषा इन्हीं की उपज होने से जिस ग्राम राग से जो भाषा उत्पन्न होती है उसमें उस गीति के तथा उस राग (ग्राम राग) के लक्ष्ण होतें है - -''[32] याष्टिक के नाम से शाङर्गदेव ने 15 भाषा जनक राग कहें हैः

''सौवीरीः ककुभष्टक - - - - - - - - - - - पंचदशैते याष्टिकोदिता''[33]

शाङर्गदेव के 15 भाषाजनक राग हैः-

1. सौवीर 2. कुकुभ 3. टक्क 4. पंचम 5. भिन्न पंचम 6. टक्क कैशिक 7. हिन्दौल 8. वोट्ट 9. मालवकैशिक10. गान्धार पंचम 11. भिन्न षड़ज 12. वेसर षड़ज 13. मालव पंचम 14. तान 15. पंचम षड़व

ग्राम रागों के प्रकार एवं कैशिक शार्ङगदेव द्वारा ग्राम रागों के पांच प्रकार माने गए है तथा उनका आश्रय गीतियों में होना माना है।

''पंचधाग्रामरागाः स्यु पंचगीतिसमाश्रयात्''[34]

ग्राम रागों के पांच भेद हैः शुद्ध, भिन्न, गौड़, वेसर और साधारण। ''काव्य, नाटक गीत इन सब में रूचि भेद के अनुसार काव्य और रीति, नाटक में वृति और गीत में गीति के भेद हुए पांचो गीतियों के अनुसार ही ग्राम रागों के पूर्वोक्त पांच भेद हुए है''[35]

'Gram-Ragas are related to the two Grama's with the intervention of Jati's only and therefore are more closely affiliated to them as compared to the Bhashas & the later Ragas. Matang raises the question as to why these ragas are related to Gramas and are called Gram Ragas and in reply quotes Bharat who say 'Because the Gram Ragas are derived from Jatis" (as quoted by K). This statement however, is not to be found in any of the available recensions of N.S."[36]

भरत ने केवल सात ग्राम राग गिनाएं है जिन्हें हम शुद्ध ग्राम राग कहते है। मतंग ने ग्राम रागों की सात गीतियां मानी है। समस्त वर्णन के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भरत के काल या उससे कुछ पश्चात तक भी ग्राम रागों का प्रचार था। इनकी चर्तुगीतियां थी जिनमें केवल शुद्ध के विनियोग का उल्लेख भरत ने भी किया है। ''परवर्तित विकास के रूप में शुद्ध से अतिरिक्त भिन्न आदि चारो गीतों का प्रचार हुआ---शार्दुल के समय भाषा एक गीति के रूप में प्रचलित थी और याष्टिक के समय तक आते-आते भाषादि तीनों प्रकार अपने विकसित रूप में आएं। मतंग के काल तक एक और नवीन रूप 'रागगीति' भी सम्मुख आई शाङर्गदेव को लक्षण में इन सभी गीतियों के साथ एक अन्य भेद 'उपराग' भी प्राप्त होता है।[37]

ग्राम रागों के पांच प्रकार कहें हैं 1.शुद्ध ग्राम रागः- शुद्ध ग्राम रागों का विस्तृत वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। यहां पर हम ग्राम रागों के अन्य प्रकारों पर प्रकाश डालेगें तथा यह देखेगें कि ग्राम रागों के इन प्रकारों में 'कैशिक' का क्या रूप है? 2. भिन्न ग्राम रागः- भिन्न ग्राम रागों के चार प्रकार बृहदेशी में कहे हैं स्वर भिन्न, जाति भिन्न, शुद्ध भिन्न और श्रुति भिन्न।

भिन्न ग्राम रागों की जाति व ग्राम, शुद्ध ग्राम रागों के सम्मान है समस्त शुद्ध लक्षण भिन्न में जाएगा केवल उनमें गान शैली में भेद है। यथाः ''शुद्धस्य लक्षणं समग्र भिन्न कैशिक स्यापि विधते ---।[38]

''यादवदी गृहीतः स्यात् सवादी च विमोक्षयते

विवादीवानुवादी वा स्वर भिन्न स उच्च्ते''[39]

अर्थातः वादी स्वर का ग्रहण कर उसके संवादी का परित्याग किया जाए, विवादी अनुवादी का प्रयोग भी संवादी के समान किया जाए तो स्वर भिन्न है।''जाति के अंश न्यास, अल्पत्व बहुत्व का ग्रहण करने पर भी स्वर प्रयोग वक्र तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरों का ग्रहण होने से जाति भिन्न है। शुद्ध कैशिक मध्यम तथा भिन्न कैशिक मध्यम में इतना भेद हैं''[40]

''परित्यन्नन्ययजाति स्वजतिकुलभूषणं

स्वकंकुलं तु संगृह्नन् शुद्ध भिन्न प्रकीतितः।।[41]

भावार्थः अन्य जाति का परित्याग कर अपनी ही जाति और कुल (जाति से उत्पन्न राग) का ग्रहण करने वाला राग शुद्ध भिन्न है।

शुद्ध कैशिक और भिन्न कैशिक के स्वर, जाति आदि समान है केवल प्रथम, तारस्थान है तथा द्वितीय की व्याप्ति मंद्र स्थान में है। शुद्ध कैशिक, शुद्धागीति में तथा भिन्न कैशिक, भिन्ना गीति में गाया जाता है। जिस स्वस्थान में शुद्ध कैशिक का आलाप होता है उस स्वस्थान को छोड़कर भिन्न कैशिक का स्वरालाप करना चाहिए। मतंग के अनुसारः

''भिन्न कैशिको मध्यम ग्राम सम्बन्धः कैशिकीकार्मारवी जात्युन्पनत्वात्।ग्रहोंऽश षड़जः। पंचमो न्यासः निषादोऽत्रा काकली।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पूर्णश्चायम् शुद्ध कैशिक वदमं यद्यपि रागः तथापि भेदोऽस्ति। मन्द्रबहुलोऽयम् येन स्वस्थानं शुद्ध कैशिके स्वरालापः क्रियते

तत्स्वस्थानं हि विहाप तैरेव स्वरैलापे कर्तव्यः। शुद्ध कैशिके ही तार स्वरैलाप कर्तव्य इति रूपान्यत्वेनायं भिद्यते।[42]

''जब चतुश्रुतिक स्वर का भिन्न प्रयोग होकर द्विश्रुतिक हो जाता है परन्तु (उसका संवादी स्वर) गान्धार द्विश्रुतिक रहता हो तो श्रुति भिन्न है।[43] उद्धारणार्थ राग भिन्न तान है जिसके विषय में आ0 बृहस्पति ने लिखा हैः-

''भिन्नतान रागे हि षड़जस्य श्रुतद्वयं गृह्णति निषादः--गान्धार द्विश्रुतिरैव। अतोऽस्य श्रुति भिन्नत्वम्।[44]

अर्थातः-भिन्नतान राग में निषाद षड़ज की दो श्रुतियां ग्रहण करता है गान्धार द्विश्रुतिक ही रहता है। अतः भिन्नतान राग श्रुति भिन्न है। भिन्न गीति के अन्तर्गत पांच ग्राम रागों में भिन्न कैशिक मध्यम तथा भिन्न कैशिक के नाम आते है। शाडर्गदेव के अनुसारः-

''---भिन्नाः स्युः पंच कैशिकमध्यमः।। भिन्न षड़जश्य षडजाख्ये मध्यमे तान कैशिको भिन्न पंचम इत्येत ---।।''[45]

अर्थातः-भिन्न ग्राम राग पांच है, कैशिक मध्यम तथा भिन्नषड़ज, षड़जग्राम के अन्तर्गत तथा भिन्नतान, भिन्न कैशिक तथा भिन्न पंचम मध्यम ग्रामीय भिन्न राग है। (क) षड़जग्रामीय ग्रामराग-कैशिक मध्यम, भिन्न षड़ज (ख) मध्यमग्रामीय भिन्न ग्राम राग-भिन्नतान, भिन्न कैशिक तथा भिन्न पंचम।

गौड़ ग्राम राग गौड़ी गीति से सम्बन्धित ग्राम राग है। गौड़ी गीति के लक्षण जिसमें हो वह गौड़ ग्राम राग है जैसे औहाटिललित स्वरों का मन्द्र में प्रयोग, बिना किसी अवग्रह के तीनो स्थानों (मध्य, मन्द्र और तार) में गमक युक्त स्वर प्रयोग। बृहदेशी में कहा हैः-

''ओहाटी मन्द्रजोपाता प्रयोगे ध्वनिकम्पितैः। अविश्रामेण त्रिस्थाने गौड़ी गीतिरूदाहृता।।''[46]

गौड़ी रागों की कुल संख्या तीन कही हैः ''---गौड़ कैशिक मध्यमः। गौड़पंचमः षड़जे मध्यम गौड़कैशिक।।[47]

(क) मध्यमग्रामीय गौड़ राग गौड कैशिक

(ख) षड़जग्रामीय गौड़ राग गौड़ कैशिक मध्यम, गौड़ पंचम

वेसरा अथवा रागगीति पर आधारित जो ग्राम राग है वे वेसरा ग्राम राग कहलाते है। इनमें वेसरा गीति के संपूर्ण लक्षण होंगे। इन रागों में स्वर का संचार वेगपूर्ण होता है। मतंग के कथनुनासरः ''स्वराः सरन्ति यद्वेगात्तस्माद् वेसरकाः स्मृताः[48]

वेसर राग कुल आठ कहे गए है।

''---षड़जे टक्कवेसरषाड़वौ। ससौवीरो, मध्यते तु वोट्टमालवकैशिकौ।

मालवः पंचयमान्तोऽथ द्विग्रामष्टक्क कैशिकः हिन्दोलोष्टो वेसरास्ते -।।[49]

(क) षडजग्रामीय वेसर ग्राम राग - 1. टक्क 2. वेसर षाड़व 3. सौवीरी

(ख) मध्यमग्रामीय वेसर ग्राम राग -1.वोट्ट 2. मालवकैशिक 3. मालवपंचम

(ग) द्वि ग्रराम सम्बन्ध वेसर राग -1. टक्क कैशिक 2. हिन्दौल

साधारणी गीति के अन्तर्गत सात ग्रात रागों में षड़ज कैशिक नाम का उल्लेख आता हैः

''--- --- सप्त साधारणास्ततः। षड़जे स्यादूरपसाधारः शको भम्माणपंचमः।।

मध्यमे नर्तगान्धारपंचमौ षड़जकैशिकः। द्विग्रामः ककुभस्त्रिशाद् ग्रामरागा अमां मताः।।[50]

उपरोक्त उल्लेख में शाडर्गदेव ने जिन सात साधारण ग्राम रागों का उल्लेख किया है वे इस प्रकार है।

(क) षड़ज ग्रामीय साधारण ग्राम राग: रूप साधार , शक , भम्माण पंचम

(ख) मध्यम ग्रामीय साधारण ग्राम राग: नर्त , गान्धार पंचम .,षड़जकैशिक

(ग) द्विग्रामीय साधारण ग्राम राग: ककुभ

इस तरह शाङर्गदेव ने शुद्ध भिन्न गौड़ वेसर और साधारण कुल 30 ग्राम राग (7 शुद्ध 5भिन्न 3गौड 8बेसर 7साधारण) बताएं है।

उपरोक्त वर्णन से ज्ञात होता है, कि ग्राम रागों का परिचय देते समय उनके ग्राम भी निर्दिष्ट किए है। शुद्ध कैशिक राग मध्यमग्रामीय है तथा जब उसे अलग-2 गीतियों में गाया जाता है तो वह उस गीति की विशषताओं के साथ अपनी पूर्व ग्राम की अवस्था में होता है जैसे जब कैशिक को भिन्न गीति में गाया जाता है तो वह भिन्नकैशिक कहलाता है परन्तु उसका ग्राम शुद्धकैशिक वाला ही अर्थात मध्यम ग्राम ही रहेगा। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गीतियां ही ग्राम राग के स्वरूप निर्धारण का कारण व आधार होती थी।

संदर्भ

1. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणि चक्रवती-पृ0-394
2. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङर्गदेव (डा0 आ0 के0 शरींगी)-पृ03
3. हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पति एवं विकास-पृ0-122
4. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0प्रेमलता शर्मा) - पृ0-78
5. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा) - पृ0-80
6. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान-पृ0-403
7. बृहदेशी भाग 2, मतंग, (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-80
8. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती-पृ0-405
9. संगीत रत्नाकर भाग 2, शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0शरींगी)-पृ0-3
10. संगीत रत्नाकर भाग 2, शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0शरींगी)पृ04
11. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0इन्द्राणी चक्रवती-पृ0404
12. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती-पृ0405
13. बृहदेशी भाग-2, मतंग डा0 प्रेम लता शर्मा, पृ098
14. बृहदेशी, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-80
15. संगीत रत्नाकर भाग 2, शार्ङगदेव (डा0आर0के शरींगी)-पृ0-4
16. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-80
17. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-4
18. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-82
19. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-83
20. संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शाङर््गदेव (डा0 आर0 के शरीगीं)-पृ0-4
21. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा) - पृ0-82
22. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङर््गदेव (डा0आर0के0 शरींगी) पृ0-4
23. बृहदेशी भाग 2, मतंग, (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-108
24. बृहदेशी भाग 2, मतंग, (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-82
25. संगीत रत्नाकर भाग 2, शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)-पृ0-4
26. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0-84
27. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती-पृ0414
28. भरत का संगीत सिद्धांत, आ0के0सी0डा0 बृहस्पति-पश्0225
29. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0130

30. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती-पृ0 412
31. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0शरींगी-पृ012
32. हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पति एवं विकास, सुन्नदा पाठक-पृ0 125
33. संगीत रत्नाकार भाग 2, शाङ्र्गदेव (आ0आर0के0 शरींगी)-पृ0 8
34. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)-पृ0 3
35. संगीतशास्त्र, के वासुदेव शास्त्री-पृ0 74
36. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)-पृ03
37. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती-पृ0 404
38. बृहदेशी 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ098
39. बृहदेशी 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा) पृ098
40. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0इन्द्राणी चक्रवती-पृ0 408
41. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेम लता शर्मा)-पृ0 98
42. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0 98
43. स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान डा0 इन्द्राणी चक्रचवती-पृ0 408
44. भरत का संगीत सिद्धान्त, आ0के0सी0डी0 बृहस्पति-पृ0 222
45. संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)-पृ0 6
46. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0104
47. संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0शरींगी)-पृ0 6
48. बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ0 108
49. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0शरींगी)-पृ0 6
50. संगीत रत्नाकर भाग 2, शाङ्र्गदेव (डा0आर0के0शरींगी) पृ0 6